Part-2 26.04.21

TOPIC-

समुदाय को शिक्षा का प्रभावपूर्ण साधन बनाने के लिए सुझाव (Suggestions to Make Community an Effective Agency of Education)

समुदाय को शिक्षा का प्रभावपूर्ण साधन बनाने के लिए हम निम्नलिखित सुझावों पर प्रकाश डाल रहे हैं—

(1) **आदर्श उदाहरण** (Ideal Examples) – समुदाय को बालक के समक्ष समाज सेवा तथा न्याय आदि के आदर्श एवं सहयोगपूर्ण उदाहरण करने चाहियें जिससे वह सामाजिक संसार से व्यवस्थापन कर सके तथा उसकी प्रगति में यथाशक्ति योगदान दे सके।

(2) **व्यापक दृष्टिकोण** (Wider Attitude) – समुदाय का दृष्टिकोण केवल संकुचित साम्प्रदायिकता तथा जातीयता तक ही सीमित न होकर व्यापक होना चाहिये। दूसरे शब्दों में, समुदाय को चाहिये कि वह अपने प्रभावों को केवल विशेष समुदाय अथवा जाति तक ही सीमित न रखे अपितु विशाल समुदाय अर्थात् विश्व तक पहुँचायें। इस दृष्टि से विभिन्न समुदायों में व्यक्तिगत स्वार्थ एवं शत्रुता की भावना नहीं होनी चाहिये। भारत में लोग संकुचित साम्प्रदायिकता तथा जातीयता के विचारों, पक्षपातों तथा सामाजिक बन्धनों से इतने जकड़े हुए हैं कि उनको आत्म-प्रकाशन एवं आत्म-अनुभूति के अवसर ही नहीं मिल पाते। यदि समुदाय का लक्ष्य मानव की सच्ची सेवा करना है, तो उसे इन पक्षपातों तथा बन्धनों को तोड़ देना चाहिये।

(3) **व्यक्तित्व का अधिकतम विकास** (Maximum Development of Personality) – प्रत्येक बालक की रुचियाँ, क्षमतायें तथा विचार अलग-अलग होते हैं। उसके इस विशेष व्यक्तित्व का अधिकतम विकास होना चाहिये। परन्तु देखा यह जाता है कि समुदाय बालक के व्यक्तित्व का दमन करके उसे केवल साम्प्रदायिकता के आधार पर समान स्तर तक ही विकसित होने के लिए बाध्य करता है। यही कारण है कि भारत में अब भी प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों में बालक को उसी व्यवसाय को अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है, जो उसकी जाति में पीढ़ी दर पीढ़ी से चला आ रहा है। विवाह आदि के सम्बन्ध में तो साम्प्रदायिकता तथा जातीयता के बन्धन और भी अधिक जटिल हैं। यह उचित नहीं है। समुदाय को चाहिये कि वह बालक के विशेष व्यक्तित्व का आदर करे तथा उसे विकसित करने के लिए हर सम्भव प्रयास करे।